कृषि महाविद्यालय के वैज्ञानिकों ने विकसित की हल्दी व धनिया की नई प्रजाति

चर्चा में क्यों?

26 सितंबर, 2021 को **कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र रायगढ़** में आयोजित **अखिल भारतीय मसाला अनुसंधान परियोजना** की वार्षिक बैठक में रायगढ़ के वैज्ञानिकों के शोध से विकसित **धनिया एवं हल्दी के नई प्रजातियों की राष्ट्रीय स्तर पर विमोचन हेतु पहचान** की गई।

प्रमुख बिंदु

- इन प्रजातियों को **केंद्रीय विमोचन समिति** के समक्ष प्रस्तुत करने के उपरांत दोनों प्रजातियों को बीज उत्पादन शृंखला में लाया जाएगा।
- धनिया की एक प्रविष्ठी को **छत्तीसगढ़ राज्य धनिया-3** के नाम से शामिल किया जाएगा तथा देश के 10 प्रदेशों के लिये विमोचित किया जाएगा। वहीं दूसरी तरफ हल्दी की प्रविष्ठी को **छत्तीसगढ़ राज्य हल्दी-3** के नाम से शामिल किया जाएगा और देश के 7 प्रदेशों के लिये विमोचित किया जाएगा। विमोचन के बाद इन प्रजातियों के बीज का विभिन्न वर्गों में उत्पादन भी किया जा सकेगा।
- इन प्रजातियों के प्रमुख प्रजनक **वैज्ञानिक डॉ. श्रीकांत सांवरगावकर** ने बताया कि धनिया एवं हल्दी की ये दोनों प्रजातियाँ किसानों के लिये बहुत महत्त्वपूर्ण एवं लाभदायक हैं, जो कि किसानों के बाज़ार के अनुरूप हैं। इनके उत्पादन से किसान ज़्यादा-से-ज़्यादा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इन प्रजातियों का उत्पादन ज़्यादा एवं गुणवत्ता अच्छी है। इनकी फसल अवधि प्रचलित प्रजातियों से थोड़ा कम है।
- परियोजना के प्रमुख अन्वेषक एवं कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता **डॉ. ए.के. सिंह** ने बताया कि इन दोनों प्रजातियों से छत्तीसगढ़ के ही नहीं, अपितु अन्य राज्यों के किसानों को भी इनका लाभ मिलेगा। इन प्रजातियों में **रोगों एवं कीटों के प्रति प्रतिरोधकता अधिक** है। इन **प्रजातियों की उत्पादन लागत कम होने एवं उत्पादन अधिक होने से कृषकों को अधिक लाभ** मिलेगा।